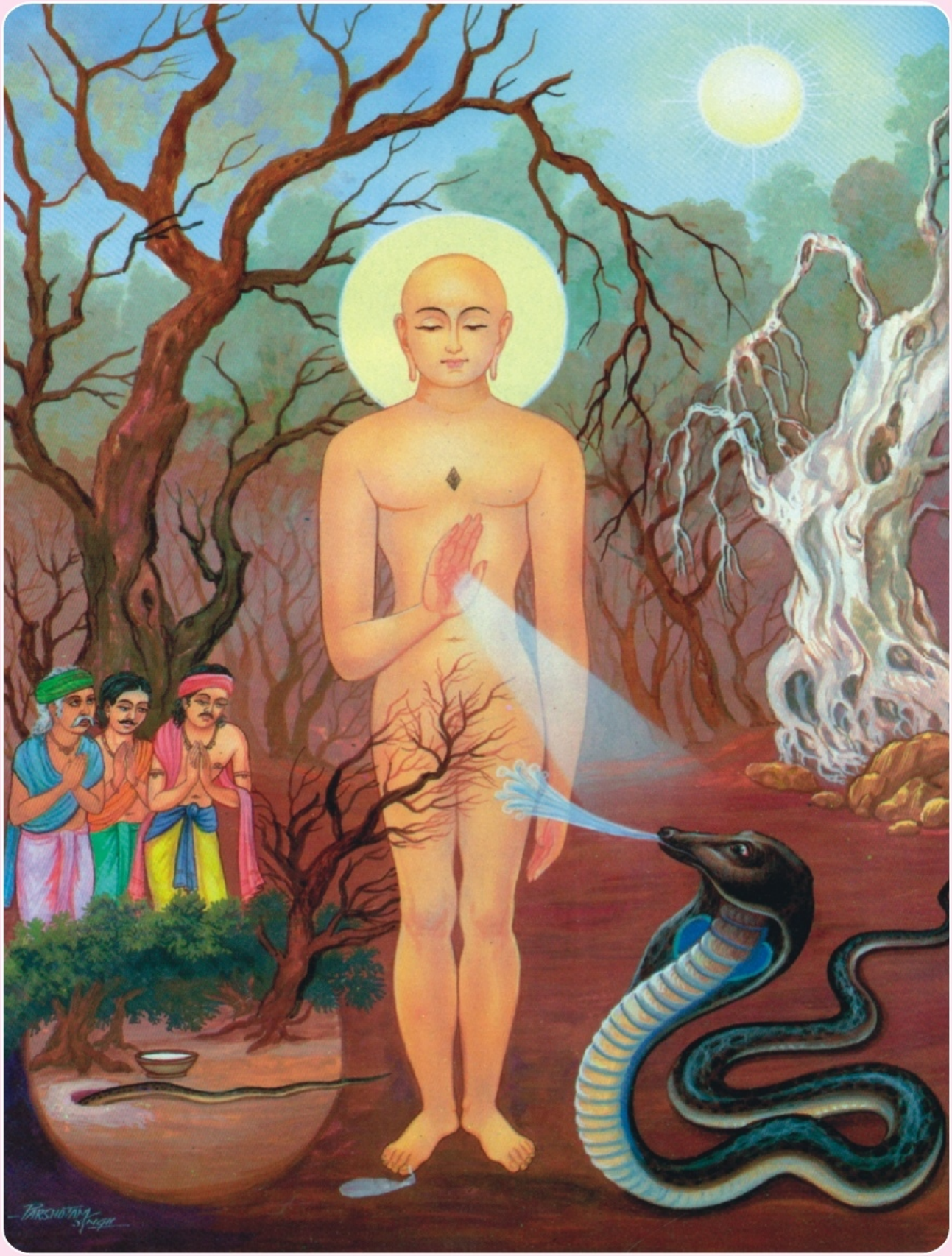

चंडकौशिक नाग द्वारा दंश मारना। दूध की धार निकलना। फिर शांत चंडकौशिक का बिल में घुसकर अनशन। नागरिकों द्वारा नाग देवता की पूजा।

विवरण 75 पेज पर

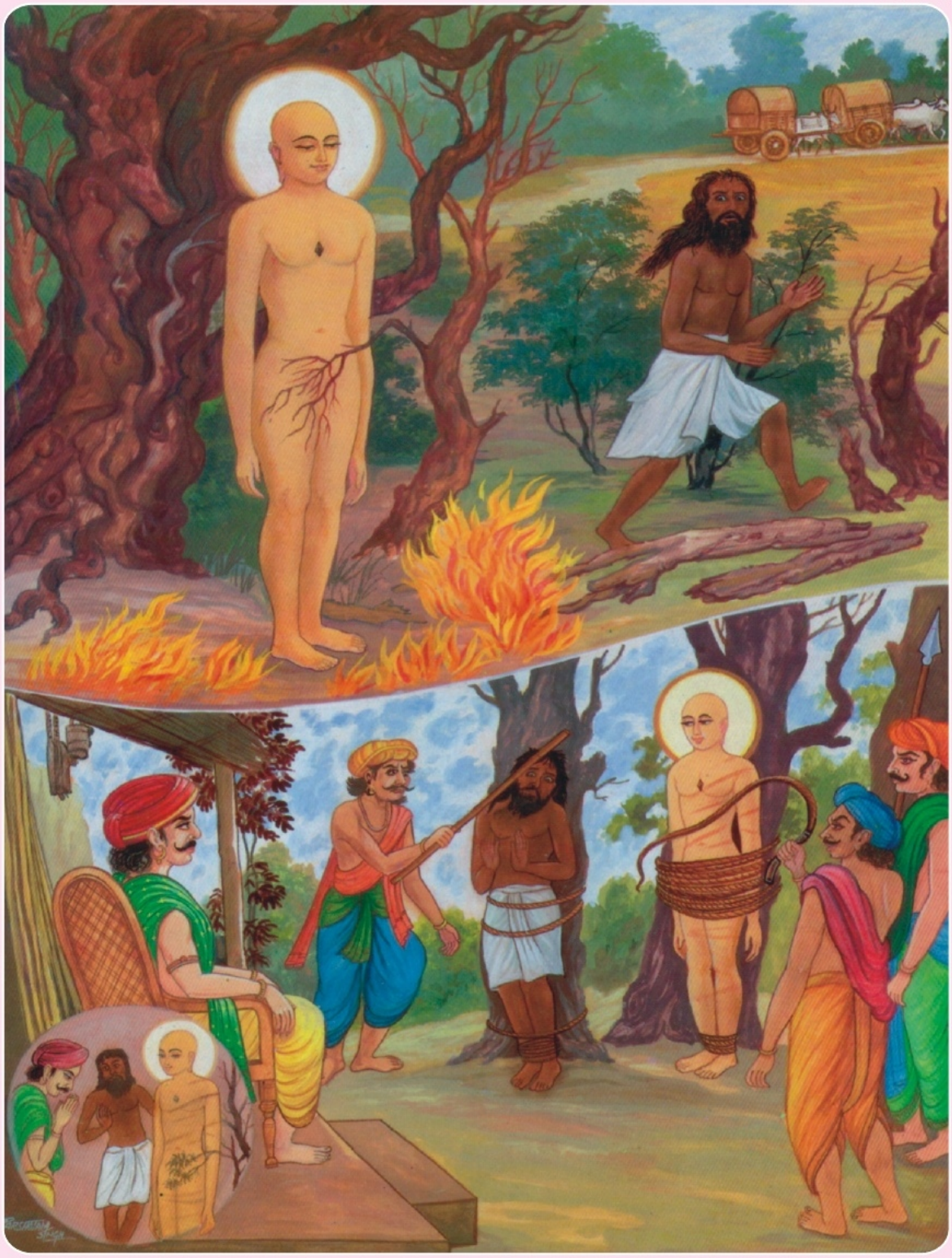

वृक्ष के नीचे ध्यानस्थ खड़े भगवान के चारों तरफ अग्नि की लपटें देखकर गौशालक भाग खड़ा हुआ। कलंबुका में भगवान को तथा गौशालक को चोर समझकर रस्सों से बांध दिया। पीड़ा देने पर भी प्रभु मौन रहे। गौशालक हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाने लगा। असलियत पता होने पर मेघ ने प्रभु से क्षमा मांगी। विवरण 78 पेज पर

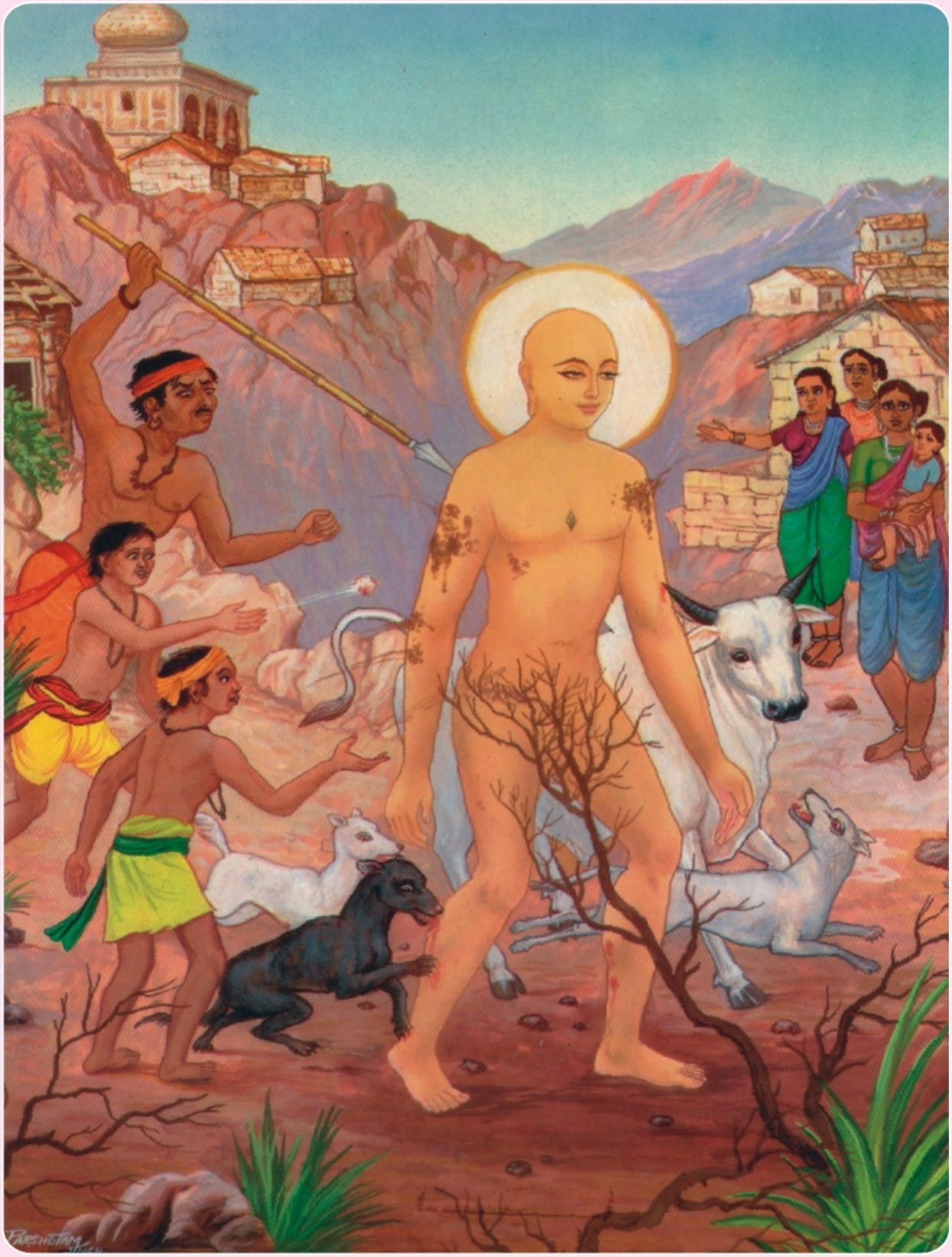

लाढ़ भूमि में अनार्य लोगों द्वारा प्रभु को अनेक प्रकार के उपद्रव।

विवरण 105 पेज पर

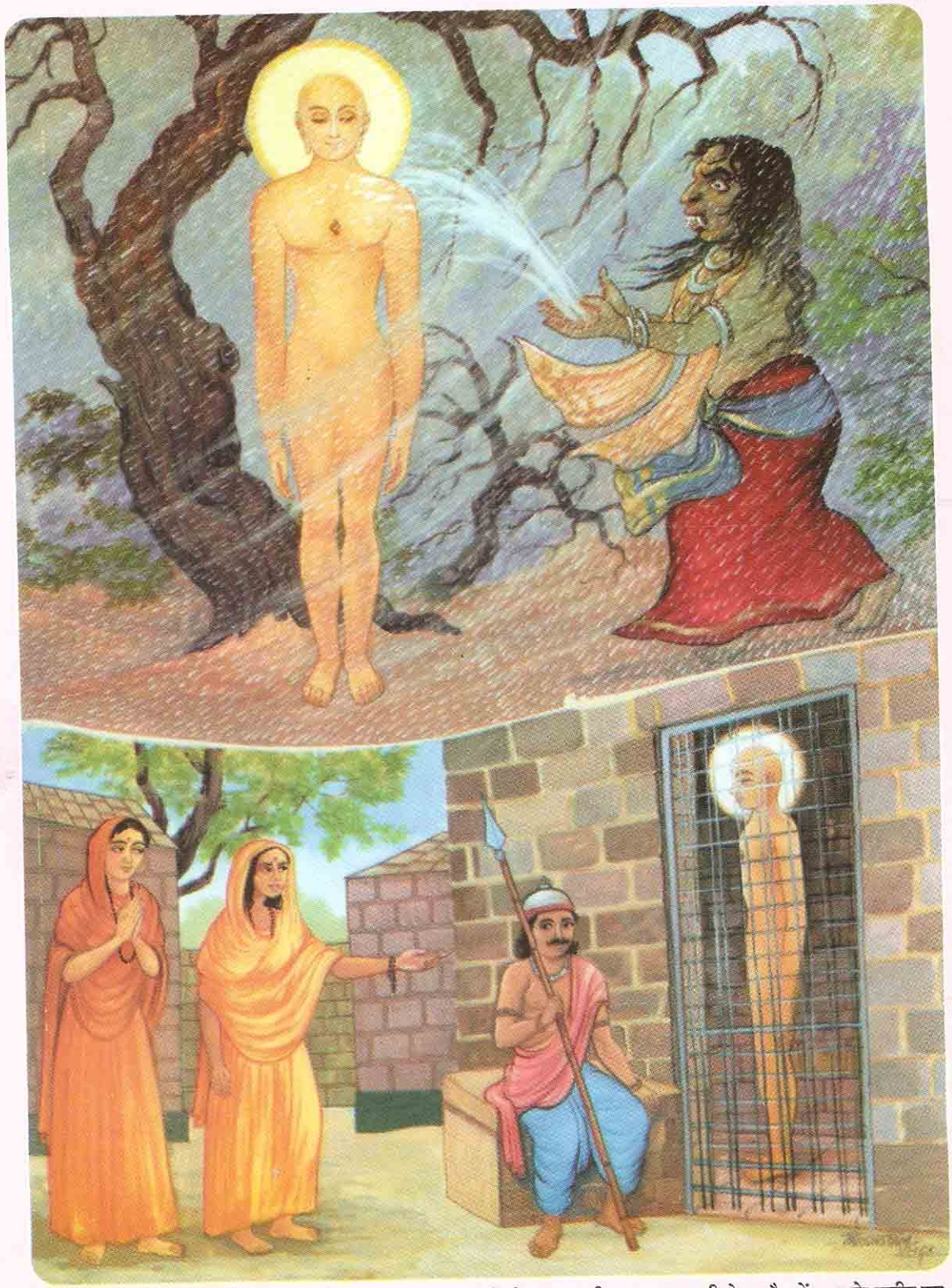

प्रभु को ध्यानस्थ देखकर कटपूतना नामक व्यंतरी ने जटाओं में ठंडा पानी भरकर उसकी तेज बौछारें प्रभु के शरीर पर डालने लगी। कूविय सन्निवेश में गुप्तचर समझकर प्रभु को कारागार में बंद कर दिया। तब विजया व प्रगत्भ्या परिव्राजिका ने प्रभु का परिचय देकर वहां से मुक्त कराया। विवरण पेज नं-84 पर